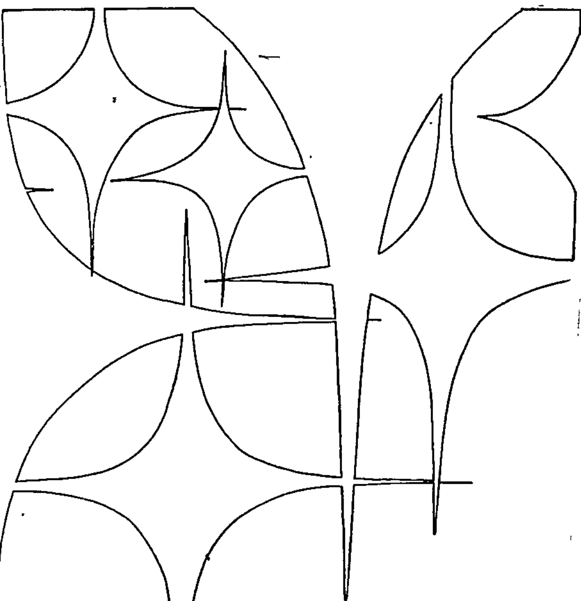


सूर्य
प्रकाशन
मंदिर,
बीकानेर



# नव-लेखन

सीमांत



राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

प्रकाशक
सूर्य प्रकाशन मंदिर
बिस्सों का चौक
बीकानेर

प्रथम संस्करण : 1987

मूल्य : छत्तीस रुपये मात्र

आवरण
स्वामी अमित

मुद्रक
विकास आर्ट प्रिंटर्स
शाहदरा, दिल्ली-32

NAVKIRAN Poetry by SEEMANT    Price : Rs. 36-00

प्रेरणा पुञ्ज

पापा

स० तारासिंह मोहल

एवम्

मम्मी

श्रीमती हरदेव कौर

को

सादर !

क्रम

कविता करें ?
मस्तिष्क में कोई षड्यन्त्र रचें
जिसमे औरतें
जांघें पीटने को विवश हो उठें
अथवा ताश बांचें ?
जिससे एक और
महाभारत को निमन्त्रण मिले।

## बोझ घुटन का

ज्वलत घुटन को
दबाने की चेष्टा व्यर्थ,
प्रत्येक परिचित है
दबती नही तपिश
प्रत्येक क्षण
प्रत्येक परिस्थिति में
महसूस होती है
बन्धुओ का शीतल जल
निष्क्रिय रहेगा
यदि राल हो भी जाये
तो भी कोई
बैरी अंगारा शरारत से
सिर निकालकर हँसेगा
तपिश का प्रमाण प्रस्तुत करेगा
शायद
सम्पूर्ण घुटन
ध्वस्त हो चुकी है या फिर
बोझ कम हुआ है
इसलिए ।

## सुझाव

आइये
उल्लू के
रौद्ररूप पर दृष्टिपात करें
पंछियों की
सहमी चहचहाहट जानें
दरख्त पहचानें
कृषक की सहायता से
सागवान
चीड़
पीपल
कोई भी हो
तना काटें
अथवा
उल्लू उड़ायें ।

## तलाशी

धुएँ के कणों में
आंखें फाड़कर
कणों को तितर-बितर कर
तलाशी ली
कुछ नहीं मिला
एक घुटन के अतिरिक्त
हां
एक शख्स जरूर मिला है।

## विश्वविद्यालय

सवालों का विश्वविद्यालय
मैं हूं
उत्तर ढूंढे नहीं मिलते
मां-बाप
भाई-बन्धु
प्रत्येक दिमागी खोपड़ी
उलझकर
कोने में जा पड़ी।

बोझ
सवालों का अधिक
उत्तरों का कम
विश्वविद्यालय के
पुस्तकालय की प्रत्येक अलमारी
धूल से सने
प्रश्नचिह्नों से लदी है
जल छिड़का मालूम होता है।

यानी मैं
धूल का पहाड़
जिसके तले प्रश्नचिह्न दबे हैं, हूँ
बेहिसाब उत्तरों ने
कुल्हाड़िया चलायी
लेकिन
कोई काम न आई।

यानी मैं
पठार कतई नही बनूंगा
उत्तरों की छुट्टी
कभी नहीं होगी
वे निरन्तर
पसीना बहाते रहेंगे।

यानी मैं
विचित्र ढीठ हूं।

## परी

तुम वही हो ना ?
परियों की रानी
जो कल
मेरे आंगन में घूमकर
फुर्र से उड़ गई थी
दरअसल
मैं तुमसे नाराज नहीं हूं
क्योंकि
कल मैं उस वक्त
बहुत प्यासा था ।

## क्षणिक अस्तित्व

क्या हो तुम ?
धुआं ?
फूंक से उड़ा दिए जाओगे
बादल का
रूप धारण कर
बरस नहीं पाओगे
टक्कर के लिए
अन्य साथी मौजूद नहीं
रास्ते के पर्वत
टांग से गिरा दिए गए हैं और
तुम्हारा अस्तित्व
योजना से पूर्व ही
होठों को
मामूली जुम्बिश देकर
समाप्त कर दिया गया है।

## चुराये गये एहसास

सिर्फ
एहसासों की परिभाषा
समझाने को
मुझे
आमन्त्रित न करें
मेरी डायरी से चुराई गई
परिभाषा ही आप
मेरे समक्ष रख देंगे
यह भी
कितना बड़ा एहसास है
कि लोग
बातों ही बातों में
एहसासों की परिभाषाएँ
मस्तिष्क मे नोट कर लेते है
और वक्त आने पर
उन पर,
स्वय के नाम का ठप्पा
ठोंक देते हैं।

## बीते हुए क्षण

दो क्षणों ने ही
सम्पूर्ण जीवन की
परिभाषा ला खड़ी की
लेकिन
पूरा एक माह भी
मौत नही ला सका
फंदे, जहर इत्यादि
सब कमज़ोर पड़ गये
प्रतीक्षा में जीना होगा
सुना है
जाने वाले लौटते भी है
ऐसा है तो फिर
जिंदगी सिमटने के क्षण
दोबारा लौट सकते हैं।

## अनुभव की पुड़िया

प्रत्येक रोज
सड़कें नापने के बाद
घर लौटता हूं
तो
एक अनुभव की पुड़िया
खीसे में डाले आता हूँ
गणित के
सवाल हल करते वक्त
पुड़िया बेकार होती है
लेकिन सुबह
जब
चाय का घूंट
भरने के पश्चात्
ये महसूस होता है
कि अब
ठीक चल रहा है
ना मीठा कम
ना ज्यादा
तो
पुड़िया का महत्व
मालूम हो जाता है
कि
यह वह है
जिसे
जिंदगी की तश्तरी में
जितनी चाहे डाल दें
फिर भी
कमी महसूस होती रहे।

# व्यक्तित्व की बात है

अभी-अभी मैं
तेज तर्रार विचारों से
मेज ठोंक कर आया हूं
कमरे में
अंधेरा है और मुझे
लाठी नहीं मिल रही
भूखा था
लेकिन
गोल मेज के चारों ओर बिछी
एक कुर्सी पर बैठकर
मैंने टांग हिलानी जारी रखी
लोग समझे,
मैं महान हूं
किसे मालूम कि
ध्यान पेट से हटाया गया।

व्यक्तित्व की बात है
लोहे पर
सोने की परत चढ़ाकर
आप
बेशक मुस्कुराते फिरो
लेकिन
परत अस्थाई होती है
लोहा दीख जाता है
विचित्र बात है
सोने पर लोहे की परत
आज तक
किसी ने नहीं चढ़ाई।

## वृत्त जिंदगी

मंजिलें लांघ चुका
पीछे छूटे झोपड़ों का अस्तित्व
केवल
बिन्दु बन कर रह गया
प्रत्येक सामने की मंजिल
वृत्त प्रतीत हुई
असख्य वृत्तों के बीच मे से
जिंदगी
सरकसी इंसान की मानिन्द
निकल भागती रही और
दर-ब-दर आंखे
रोशनी से फड़कती रहीं
अब
वापस लौटने को जी चाहता है
पीछे छूटे हुए बिन्दुओं को
कविता में ढालने की
इच्छा है
बस।

## वास्तविकता

बुलबुले गम के
समन्दर जिंदगी से उठकर
बहुधा
वहीं टूट जाते हैं
एक क्षण के लिए इन्हें
नजर अन्दाज कर दें तो
जिंदगी केवल
हिलोरों की जान पड़ेगी
चट्टानों की बात छोड़ दें
क्योंकि चट्टानें
लहरों से कट जाती है
समन्दर कभी नही कटता
प्रत्येक बुलबुला
टूटने के पश्चात्
आती है
हर्ष की लहर
जो तोड़ती है चट्टान
समन्दर गुनगुनाता रहता है।

## सलाह

भवरों से बोल दें
फूलों पर मंडराना छोड़ दे
केवल दिखावा है
खुशबू
रत्ती भर भी नहीं
यूं ही
चक्कर लगाकर
वक्त बरबाद करना
कहां की अक्लमंदी है ?

गुनगुनाना कम करो
कभी संभव हो तो
रेल के डिब्बों पर
'बातें कम, काम ज्यादा'
लिखे पर गौर करना।

## जिंदगी

अंधेरी सड़क पर
चलने के दौरान

सामने से दिख रही
किसी वाहन की मद्धिम सी बत्ती
उत्साह बढ़ाकर
सूजे पांवों का दर्द
दबा देती
और
यूं ही वाहन
एक के बाद एक
निकलते चले जाते
अस्थाई रोशनी
अस्थाई उमंग पैदा करती ।

हम
उत्साह, उमंग
और कुछ भय से
पांवों के छाले फूटने के बावजूद भी
सरपट दौड़ते हैं ।

## निवेदन

छोटी सी बदली ने
मलेरिया पीड़ितों को
कंपकंपा दिया है
सूर्य और गोलियां
निश्चित समयान्तराल पश्चात्
सामने आ खड़ी होती है
कोई जिये तो कैसे ?
दो कदम बढ़ो तो
सूर्य छिप जाये
भीतर घुसें तो बेशर्म
बाहर आ धमके
केवल
गोलियां है हमारे खीसे में
हम जड़ है
तुम आवारा
हमारे खीसे से
नजरें हटा लो।

## रिपोर्ट

मैं नही चाहता कि मेरा बेटा भी
कवि बने
चाहूंगा कि वह
कवित्व के घेरे से बाहर
खुली हवा में जिये, ऐश मारे
यह कविकर्म
वंशानुगत चलता रहा तो
मेरे दादा-परदादा के
हल-बैल का क्या होगा
वे सब धरे रह जायेंगे
कविताएँ
बैल का चारा नही बन सकती
चमचमाते अक्षर खाद नही हो सकते
यह तो केवल
मेरे वंश की बात है, वरना
राष्ट्र का क्या होगा ?

जय-जवान, जय-किसान के नारे पर
क्यों न फिर मिट्टी पोत दें
खेलों में पिछड़ा राष्ट्र
साहित्य मे
आगे बढा तो क्या बढ़ा
गांधी के चरखे को
कोने में पटककर
कविता लिखना
कहां की समझदारी है
और यहा हाल है कि
कवि एनासिन निगलकर भी
दौड़ते है।

## नासमझी

ठिठुरते लोग
जलती आग देखकर
कंबल
लपटों में झौंक देते हैं
लकड़ियां
कब तक जलेंगी भला
सर्दियां बहुत लम्बी चलती हैं
यूं
इंसान भी साथ चलते है
मगर
बगैर कंबलों के नहीं।

लपटों से क्या लगाव ?
इनसे तो
जीवन के अन्तिम दिन भेंट होगी
उस समय
कुछ भी हो
सर्दी या गर्मी ।

## सन्तोषजनक कविता

क्या मालूम
यही कविता
पुरस्कार ले
अथवा
बदमाश मन्नू के हाथ लगे
और जहाज बने।

डायरी में
लेटी कविता निष्प्राण है
पहले
अन्तर्मन और फिर
जमाने के संग चले तो
सन्तुष्टि
सबसे बड़ा पुरस्कार है
एक अच्छी कविता
के बाद के डकार से भला
पुरस्कार कहा बराबरी करेगा ?

## कविता की यात्रा

बंदिशें
इस कदर बढ़ीं
कि धूप को तरस गए हम
रजाई से निकलकर
कभी झरने की ओर
जाने की आज्ञा न मिली
स्याही की दवातें
एक के बाद एक
बराबर समाप्त होती रहीं
लिखते रहे
सूर्य के दो दफा
मटरगस्ती कर चुकने
के पश्चात भी
लेकिन
लिखा चांद पर ही
हालांकि अमावस थी
यों सितारे भी बराबर
चक्कर लगाते रहे
मेरी कविता के इर्द-गिर्द
चांद रुका रहा
कलम बढ़ती रही
एक पखवाड़ा
निकल चुका और
अब शायद बाहर

पूर्णिमा है
लेकिन—
अब कहीं कविता पर
चाद टिकता नही
और सूर्य
कविता से हटता नही।

## गिरगिट से दिन

कोई दिवस
ऐसा भी रहा कि
डायरी का पन्ना
सफाचट्ट धरा रह गया
कभी
यह भी हुआ कि
पन्ना कम पड़ गया
सफाचट्ट के दिन
मैं कवि था
सम्पूर्ण घटनाक्रम को
दो पंक्तियों में बांधकर
स्वतन्त्र हो गया
और
पन्ना कम पड़ने के दिन
एक कथाकार रहा
कलम को
स्वयं के इर्द-गिर्द
बेमतलब घुमाता रहा।

## सीमा के समीप

आज तक
सीमा के
समीप नही फटका मैं
इर्द-गिर्द घूमता रहा, बस
यहां 'सीमा'
सज्ञा नही है
भावनाओं—एहसासों की गठरी
हवा में लहराता
बहुत दूर तक निकलता रहा
एक रबड़ सा हाथ
वापस खींचता रहा
चूंकि आज तक कोई
सीमा से बाहर नही जा सका
अंततः मैं
सीमा के आलिंगन का
दरवाजा खटखटाता रहा
लौटता रहा।

## अतृप्त शब्द

तुमने
उस शब्द को
गलत सिद्ध किया
मैंने
उसके सही होने का
सबसे बड़ा प्रमाण
ला खड़ा कर दिया
शब्द सदैव के लिए
पिंजरे में बंद हो गया।

तुम्हारे
शब्द की चोंच मे
बेहिसाब चुग्गा डालने पर भी
कोई विशेष प्रभाव नही पड़ा
मैंने केवल
एक दाना ही फेंका कि
शब्द
तृप्त हो गया ।

## फूल-पत्थर

पत्थरों के मध्य
पहली बात
फूल टिक ही नही सकता
टिक भी जाये तो
उसका मन नही टिकेगा
मानसिक तनाव को
पत्थर भला क्या समझें
ठोकर लगे तो
दूर जा पड़ें
लेकिन आकार मुद्रा में
कोई परिवर्तन नही
ऐसी घटनाएँ जबकि
फूल के अस्तित्व का
प्रश्न खड़ा कर देती है
आकार मुद्रा की बात छोड़िए
बात
आत्महत्या तक
जा पहुचती है ।

## मुलाकात

आज वह दीख पड़ा
बहुत दिनों पश्चात
बाजार में
मित्रों के संग
मैं कांप गया
उसकी आदत से परिचित हूं
हर बार वह
मेरे
गायब रहने का
कारण पूछता है
चाय की प्याली पर
बात कभी नहीं रुकती
उसने दौड़ते हुए
यही कहा
'अच्छा फिर मिलेंगे'।

## तिलिस्म व्यक्तित्व

लोगों ने कहा कि
प्रत्येक प्रयास
एक त्रुटि छोड़ जाता है
मेरे विचारानुसार
प्रत्येक त्रुटि
एक प्रयास को जन्म देती है
मैं सदैव
विपरीत कहता रहा हूं
लोग पूरब को गये
मैं पश्चिम में बढ़ता रहा हूं
चाल संवारने में
ठोकर खा बैठा हूं
किसी
सिरफिरे ने बताया कि मैं
विपरीत चल रहा था और
मेरे बूटों की एड़ियों में
जान नहीं थी ।

## बोझ

अर्से बाद
अंधेरे से बाहर
निकलकर आ जाने पर
विचित्र सा लगता है
मानो
कंधों का बोझ
कम पड़ गया हो
मुख मण्डल पर एक ताजगी
महसूस की जा सकती है।

यह नहीं कि बोझ
रत्ती भर सा था
प्रश्न यह है कि बोझ
रत्ती भर सा होने के बावजूद भी
इस कदर भारी क्यों था
कि कंधे झुक गए।

अब पीछे मुड़कर देखने में
कोई लाभ नहीं,
छोड़ बोझ
रत्ती भर सा रहा हो,
या सेर भर।

## योजना

यह तो
अच्छा हुआ कि
मेरी याददाश्त ठीक है
मुझे वे दिन याद हैं
और समय
ढग से गुजर रहा है
भुलक्कड़ होता तो
नौबत आ जाती
केवल
भविष्य मे झांककर
जीवन नही गुजरता
अतीत का भी तो
अपना अलग महत्व है
दुखद अतीत सबक देता है
जबकि
सुखद अतीत
घुटनों के बल गिरा देता है
मित्रों की राय है
कि मैं पहले
पैरों पर खडा हो जाऊं
फिर उसके बाद
कोई और बात सोचू
लेकिन
मेरी योजना है कि

पहले अतीत की गठरी
बांधकर कंधे पर रख लूं
फिर चलूं
मंजिल मिले ना मिले
गठरी में से
स्वादिष्ट कौर तोड़ता रहूंगा
जीता रहूंगा
चलता रहूंगा
मित्र, समाज और दुनिया
भाड़ में जाये।

## वेशर्म मैं

मैं
उसके एहसानों तले दबा हूं
कल
अंतिम एहसान के वक्त
उसे सब्र नहीं हुआ
और मुझे गाली दे दी
मैं समझता हूं
उसके अन्तर्मन ने
गाली नहीं दी होगी
जुबां से फिसल गई होगी
लेकिन
एहसान की भी तो हद होती है
जबकि
मैं ढीठ हो चला था
दोष किसको दिया जाये
खुद को ?
हां, यह बिलकुल सही है
मैं, हराम की खाता रहा हूं
आज से यह सब
बंद।

## शांत शहर

शहर की
ख़ामोशी से मतलब
वहां के निवासियों के
बंद मुंह से नहीं है
हां,
पंछी अब
घोंसले बनाने को
एक बडे और नये
दरख़्त की तलाश में है
लेकिन शहर में ठूंठ हैं
अतः
घोंसले बन जाने का
प्रश्न ही नहीं उठता
पहले
फलदार घने दरख़्तों में
ऐसा हुआ था कि
घोंसले बनाये गये थे
पता नहीं
किस कहानी का
विश्वासघाती गिद्ध आता रहा और
अण्डे तोड़ता रहा
शायद कोई बाहर का
भेदी रहा हो जो
दरख़्त की चहचहाहट

बर्दाश्त न कर पाया हो
और
दरख्त की शाखाओं को
साफ कर देने का
आदेश दे डाला हो
शहर की चुप्पी को
पंछियों की बंद चोंच से
जोड़ा जा सकता है
अथवा यूं कह लो
शांत शहर और गूंगा दरख्त
एक दूजे के पर्याय हैं
यही वजह है कि
अब मन्नू
टोनी से खेलने
गली में नहीं आता
लेकिन अंततः
संध्या में
चमगादड़ों ने शहर की
खामोशी पर तरस खाया
और फर्राटे भरे।

## विकलांग हृदय

तुम मेरी नजर से
गिरे हो तो मैं
जब मेरे सामने
ऊंची मीनारें भी
भूकम्प से पठार बन गई थी
भूल चुका हूं
मलबे में बहुत से
इन्सान दब गये थे
जबकि तुम्हारे गिरने से
मेरा हृदय तड़प रहा है
उन मृतकों के भूत अब
मस्ती में होंगे
लेकिन मेरा हृदय
उम्र भर धिमटता रहेगा और
कोरेनरी से लड़ता रहेगा
केवल तुम्हारे
मेरी निगाह से
नीचे आ लुढकने के कारण।

## कल्पना

मूल्यहीनता की कल्पना
जेब में रखकर
मंजिल तलाशते
किसी को देखा है आपने ?
कल्पनाओं के
जड़-तना हो तो
सीढ़ी के बिना भी
तने से चढ़कर
फल खाये जा सकते हैं
वरना
कल्पना के
दरख्त के नीचे बैठकर
मुंह से
'अंगूर खट्टे हैं' ही निकलता है ।

## ढीठ समय

गर्मियों की
दोपहरी नहीं कटती
बरसात भी तो
हर रोज नही होती कि
टापरी और पतनाले मे
चू रहे जल को
एक टक देखते रहें
ताकि दोपहरी ढलने और
संध्या होने का
आभास भी न हो
कविता करें ?
मस्तिष्क में कोई षड्यन्त्र रचें ?
जिससे औरतें
जांघें पीटने को विवश हो उठें
अथवा ताश बांचें ?
जिससे एक और
महाभारत को निमन्त्रण मिले ।

## एक विनाश यह भी

आंधी में
चिड़िया के बच्चे
उड़ नहीं पाए
कौआ उड़ा और उन्हें
दबोचकर वापस लौटा
यूं भी तो आंधी से
घोंसला टूटना ही था
चिड़े-चिड़ी ने
बच्चों को अनुपस्थित पाकर
जान दे दी तो क्या हुआ ?
आप सोचते होंगे
इंसान बचे होंगे ?
यहां भी वही हुआ
बहुतों के कंठ सूखे
कुछेक के पेट फूटे
शेष रहा
विनाश का प्रमाण
एकान्त।

## कलयुगी अवतार

उसके कंधे झुक गये
कंधों पर
सन्दूक नहीं था
लेकिन बीच में
हल्का सा अस्वस्थ
मस्तिष्क जरूर था
उसने पेंट की जेब में
हाथ ठूंस लिये
सर्दी नहीं थी
जेब में छुट्टे पैसे थे इसलिए।

उसने एक कीड़े को उठाकर
जेब में रख लिया
उसका विश्वास था कि वह
शिव से भी बड़ा है
और वह कीड़े को
गेहूं के दाने की बजाय
छुट्टे पैसों की
चकाचौंध रोशनी से जीवित रखेगा।

## कुंठित मानसिकता का चित्र

लोग
किस मानसिकता मे गुज़रते
आप जानते हैं ?
होठों पर शिकायत नही होती
और हाथ में
ब्रुश लेकर
फटी टाट पर बैठ जाते
ग्राहक
गज़ब की चित्रकारी देखकर
मर मिटते
जबकि
चित्रकार का कहना है कि
यह चित्र
पृथ्वी का नहीं,
रोटी का है
गहरे धब्बे
पृथ्वी के गड्ढे नही
ये तो
किसी ग्रहिणी की
अपरिपक्व पाक कला को
दर्शाते हैं
आप भी तो
इस चित्र पर
हिरोशिमा जानकर

टूट पड़ते हैं
उस भिखारी की भांति
जो
कच्चे-पक्के अन्न की
परवाह नहीं करता

यह तो महज
लोगों की
कुंठित मानसिकता का
चित्र है।

## तूफान

खिड़कियां खोल दो
तूफ़ान को भीतर आने दो
सन्नाटे को जड़ से उखाड़ना है
रुक जाइए
तमाशा देखकर जाइए
तूफान यूं ही गुज़र जाता है
अथवा
मेरी कल्पनाओं का घर
उखड़ जाता है

आप क्या लिखते हैं
मैं नहीं समझ पाता
लेकिन आप द्वारा लिखित
पृष्ठों को अंगुलियों पर
गिनने का प्रयत्न करता हूं
तूफ़ान में कौन टिका है भला
पन्ने संभालिए
कलम जेब में ठूसिए और
समाचार बटोरते-बटोरते
दुनिया से निकल जाइए।

## परत

टूटते हुए
खीझ मे कभी
अव्यवस्था के विरुद्ध
आंखे उफ़नती हैं
मात्र
असहमति और
रोष जाहिर करने को
हम हैं कि
कर देते बगावत
लेकिन फिर
कुछ भी तो नही हुआ
सेल्फ की पुस्तकें
अस्त-व्यस्त ही तो पड़ी हैं
रेत की परत
मस्तिष्क पर जमी है
क्रोध में
नथुनों से निकली हवा
भला
परत हटा पायेगी ?

## विवशता

कुत्ता बोलता है
गुर्राता नही
नियति ऐसी है कि
कुत्ते के साथ
गुर्राना शब्द जुड़ जाता है
ऐसे इसान को
तलाश कर सकोगे
जिसके साथ
गुर्राना अथवा भौंकना जुड़ा हो
मात्र लिख देते हैं हम।

चमड़ी
गोरी होने के बावजूद भी
कालू, कालू ही रहेगा

काले को गोरू और
कुत्ते को इंसान
लिखने से हिचकते हैं हम।

स्व० श्रीमती इंदिरा गांधी की स्मृति में

## मशाल

लौ को
बुझाने की चेष्टा में
फूंक का
प्रयोग हुआ लेकिन
लौ
बुझने की बजाय
एक मशाल की
शक्ल ले बैठी
लोग
पीछे-पीछे चले
मशाल
राह दिखाती रही
सदियों तक यही होगा
मशाल, जगमगाती रहेगी
तपिश
इस कदर रहेगी कि लोग
अनन्त काल तक
रक्त में हरकत
महसूस करेंगे।

## पंछियों की समझदारी

ठूंठ पर
पंछियों का जमघट
कि कौन
सबसे पहले
कोरी टहनी पर
घोंसला बना पाता है
प्रतियोगिता
कुछ यूं रहती कि
सबकी चोंचें
घिस जातीं और
तिनका-तिनका
उठाकर लाने में
सांस फूल जाती
पांव टूट जाते
बेशर्म और
ढीठ सा ठूंठ
हंसता रहता
पंछी रोते रहते
इस कदर होड तो
उस वक्त भी
नही हुई थी
जब ठूंठ
यौवन में रहा था
टहनियां थी

पत्ते थे
सन्तुष्ट राही थे
छाव थी जो
संध्या तक
दूसरी तरफ
स्वयं घूम जाती थी
यद्यपि
पंछी आते थे
लेकिन लौट जाते थे
रुकने के नाम पर
दो पल ठहर कर
एकाध पत्ते में
छेद कर डालते थे
घर बनाने की धुन
किसी पर भी
सवार नहीं हुई
लेकिन जब ठूठ से
जंगल का
बुढ़ापा आरम्भ हुआ
तो पंछियों ने
फ़िक्र की और
यौवन की
अंतिम घड़ियों को सोचा
इसलिए घर बनाने मे
चौंचें तक
घिसा डाली।

## आप

आपकी
आदतों से लगता है कि
आप
वह नोट करते हैं जो
कम है
वही लिखते हैं
जिसकी ज़रूरत है
ये बात
अलग है कि आप
दीखते वही हैं
जो आपकी
लेखनी मे
अनुपस्थित रहा होता है ।

## हृदय उद्वेग

बहस है
ज्ञान है
सलीका है
जज़बात और एहसास
गायब हैं
इज़हार की गई
पांच पृष्ठ की कहानी
पांच पलों के मौन से
कहीं कम है

हृदय उद्वेग
उस वक्त नहीं रुकता
जब पांव नहीं बढ़ता

परिभाषाएं अक्सर
परिभाषाओं से
जुड़े लोग ही समझ पाते हैं
वरना तब
हृदय उद्वेग नहीं होता
जब पांव बढ़ता है ।

## विशाल मैं

रेगिस्तान लांघना
मेरे लिए कठिन बात नहीं
इक क्षण में ही
कभी-कभी तो
मरुभूमि पार की है मैंने
चिल्लाया नहीं हूं
पांवों के छालों का पानी
पी गया हू
मरुभूमि में दरख्त ढूंढने का
प्रयास नहीं किया
कि थोड़ा
छांव में लेट कर सुस्ता लू
मेरी मेहनत शायद रंग लाये और
दरख्त खुद-ब-खुद समीप आ जाये
कुछ भी हो
हर हाल में मुझे
रेगिस्तान लांघना है
ये दिखाना है कि
रेगिस्तान विशाल नहीं है
मैं हूं।

## गांव बोलता

गांव की छोरियां
खेत के भुट्टे
घूरे
शहर मे पधारने पर
आपका हार्दिक स्वागत

ये नवकी
ऊंट से चलती और ऊंट
बेरोजगार युवक सा
निरुद्देश्य वृत्ताकार घूमता
अंधी पीसे कुत्ता खाय
कुत्ते
अलग-अलग नस्लों से
कोई मोटा
कोई पतला

दोपहर का पहर
देखने लायक
बूढ़ा रमुआ
बाहर चबूतरे पर
कबूतरों की गुटर-गू के मध्य
धुआं छोड़ता
फिर सरपट दौड़ता

प्रीतो
शहरी बाबू से मिलती/हँसती

तो उम्रभर के वास्ते
जड़वत् होती
नहर में पानी नहीं आता
प्रीतो आंसू बहाती
फसल उगती

एम० ए० पढ़ा राजेश
अनपढ़ से व्याह रचाता
और फिर
आठ बच्चों का
बाप बनता

नहर में पानी नहीं आता
आता तो
भाई-भाई को लड़वाता
प्रत्येक औरत
वक्त से पहले
विधवा हो जाती

गौरी
चार बजे उठता
आठ बजे लौटता
मिट्टी से मिट्टी होता।
वसन के अभाव से
ठंड से अकड़ता

ट्रांजिस्टर का गूंज उड़ता
मगर, पर भी
मिट्टी डाई पर
दाग लगता
कुत्ता रोता
दाद रोता।

## सिद्धान्तवादी पौरुष

निगाह
कोई भी हो
वासना से
अछूती नहीं होती
हल्की सी तपिश
विस्फोट बन जाती
जबकि कभी
यह भी होता कि
भयंकर विस्फोट में
नाम मात्र को भी
तपिश विद्यमान नहीं होती
यह सब
तब होता जब
निगाह सिद्धान्तों पर चलती
और सिद्धान्त
पौरुष को
पीछे बांधे चलते ।

## परिवर्तित होता मैं

क्या मैं
वही हूं जो कल था
और जो कल हूंगा
चेहरे की झुरियां
तन गई थी
आंखें फोकस हो गई थी
मानो
अब शायद
एक जिंदगी नही रहेगी
स्वयं ही के हाथों दफन हूंगा
लेकिन जब
चेहरे ने विकृति छोड़ी
आंखों ने केन्द्र बिन्दु बदला तो
लगा कि
अभी तो मुझे
बहुत जीना है
बहुत लिखना है
बहुत खाना है
बहुत पीना है साहित्य।

## वक्त सा मैं

आज
लगता है जैसे मैं
दहलीज से बाहर
आ पहुंचा हूं और
सीमा से अधिक
इस कदर बोलने लगा हूं
कि कभी-कभार
यह सन्देह होता है कि
कहीं, मैं किसी की
घर की दहलीज में
प्रवेश तो नहीं कर रहा
पड़ोसी लांछन लगा दें
कहें
यह इंसान तो सिरफिरा है, विचित्र है
अभी-अभी गम्भीर था
अब हँसने चला है
कहीं यह
वक्त तो नहीं ।

## व्यथा

उसका
जिक्र आते ही
मैं सदैव
पतन की तरफ बढा हूं
ख्याली पुलाव ही
जिंदगी उलटकर रख देते है
मैं स्वयं को
नियन्त्रित करने का
भरसक प्रयास करता हूं
लेकिन अंततः
उसका नाम
डायरी में
बार-बार लिखना पड़ता है
कुछ भी नही मिलता
मेरे
मंजिल पर
पहुचने से पूर्व ही
सूर्य डूब चुका होता है।

## मुखौटे के एहसास

मुखौटा लगाने से
यही नही होता कि
एहसास नही बदलते
हां, लेकिन
प्रत्येक एहसास की
पुनरावृत्ति पर
अंकुश लगा रहता है
मर्जी से
एहसास पैदा करना
कठिन हो जाता है
और फिर बेवक्त
एहसासों से खेलने के अवसर
जाते रहते
मुखौटे से कुछ विशेष नही होता
लेकिन जो होता है
वह
वास्तविक एहसास के
इर्द-गिर्द घूमता रहता है।

## परिचय

शहर से
परिचय बढ़ाने की
शुरुआत हुई थी कि
राह में गांव मिल गया
मकान
खण्डहर दीखे
और लोग
दीमक लगे वड़ महसूसे
मन खट्टा हो गया
शहर में देखी
पूरी पिक्चर का मजा
किरकिरा हो गया।

## मुझसे मिलती पंक्तियां

जैसे मेरे लिए ही
ये पंक्तियां लिखी हों
अथवा संभव हो कि
मैं स्वयं ही
इन पंक्तियों में
ढलता चला गया होऊं
यह भी सम्भव है कि
किसी सिरफिरे विशेष का
हाथ रहा हो
और उसने
किसी बुजुर्ग को
रिश्वत देकर
उसकी जुबां से
कहलवा दिया हो कि
इंसान अकेला आता है
अकेला जाता है ।

## सपना

एक ऐसा सपना
मेरे सामने है
जिसके बलबूते पर
चाहूं तो, जीवित रह सकता हूं
मृत्यु के कई
बहाने संभव है
यह नही चलेगा कि
सपने की अवहेलना करने पर
ऐसा हुआ
हां
ये हो सकता है कि
दो सपनों के बीच धंस जाऊं
सपनों के बीच की
गहरी खाई को देखकर
दिल दहल जाये
तब
मृत्यु की वजह
खाई की गहराई होगी।

## ख़ामोशी

इन्सान की आवाज को
ट्रैक्टर की आवाज से
दबाया जा सकता है
लेकिन
इंसान की
ख़ामोशी के तले
कुछ और नहीं है
गर्मियों की दोपहरी की
ख़ामीशी में भी कोई
एकाध पंछी चहकता है
लेकिन
इंसान की ख़ामोशी
इससे भी महफ़ूज है ।

## साहित्यिक रिपोर्ट

मैंने
अब तक जो लिखा
वो एक दुर्घटना थी
इसके बाद जो लिखूंगा
वह स्पष्टीकरण होगा
और फिर शायद
फैसले के वक्त
सभी केस रफा-दफा हो जायें
और मैं
गीता पर
हाथ रखकर विश्वास दिलाऊं
कि अब मैं
दौड़ूंगा जरूर
लेकिन धैर्य से।

## शब्द और आकृति

अक्षरों को जोड़कर
एक
सुन्दर शब्द बनाना
और
छोटी-छोटी
रेखाओं को जोड़कर
एक सुन्दर आकृति
बना डालने में
बहुत अन्तर है
शब्द बहुत कुछ है
जबकि
आकृति कुछ भी नहीं
केवल
आकृति से क्या होगा
तहजीब तो
मुख से निकले
शब्द से मालूम पड़ेगी ना ?
और तहजीब
सुन्दरता से
कहीं अधिक महत्व रखती है
तहजीब है तो
सुन्दरता खुद-ब-खुद है
लेकिन
सुन्दरता होने से

सहृदय का
अनुमान लगा लेना
कोरी मूर्खता है
अतः
शब्द और आकृति में
अन्तर
जमीन-आसमान सा है।

## स्पर्श जिंदगी है

स्पर्श
सांस है
और सांस, जिंदगी
वदन पर रेंगती
चींटी पर
बहुत गुस्सा आता है
जबकि
वदन के भीतर
रेंगते कीड़े से
प्रेम है

स्वयं से पृथक होकर
किसी हम साये पर ही
आच्छादित हो जाना
मौत भी नहीं है
ज़िंदगी भी नहीं है
दोनों के मध्य
रस्सी पर चलती
अनुभवी लड़की का बांकपन।

## दरख़्त और किरण

एक नवकिरण
अंधेरे को बेधती
पार निकल गई
अंधेरे में मौजूद
एक दरख़्त की
मुरझाई हुई
शाखाओं को जीवन मिला
और फिर
प्रत्येक शाखा ने
धूप से प्रगाढ़ मित्रता की
दरख़्त और किरण
एकाकार हो गये
पतझड़ के दिन भूले
उस वक्त
दरख़्त ने
टूटे हुए पत्तो को
फिर से बटोरने का
सपना देखा

## झूलते हुए पल

गम वही हैं
जिनकी उम्मीद थी
खुशिया वे नहीं हैं
जो चाही थी
कुल मिलाकर
मैं एक सपना हूं
प्रत्येक रात
एक नया रूप
धारण कर लेता है
लेकिन
सभी सपनों को
जोड़ने के बाद जो
वृहत सपना बनता है
उसमें से एक
आशा की किरण निकलती है
मैं
सीमा के समीप का
प्रत्येक पल झूलने लगता हू
सपनों से निकलती किरण
सीमा पर
हावी होती चली जाती है।

## डायरी

कई बार
डायरी के
पीछे के पन्ने
फाड़ देने पड़े हैं
कई बार
अग्रिम डायरी
पूर्व में ही
लिख देने को बाध्य हुआ हूं
कई बार
डायरी लिखने की
आदत को
त्यागने की बात सोची है
और पीछे के
फाड़े हुए पृष्ठ
भविष्य की तारीखों में
जोड़ देने का
मन हुआ है।



सीमांत

जन्म : 30 जुलाई, 1964, सिरसा (हरियाणा)

शिक्षा : एम० एस-सी (गणित)

उपलब्धियां : नवें दशक के आरम्भ से लेखनारम्भ, उत्तर भारत की लगभग प्रत्येक पत्र-पत्रिका में कविताए, निबन्ध, व्यंग्य व कहानियां प्रकाशित।

एक वर्ष तक युवा लेखक संघ, हनुमान गढ़ की पैरवी।

युवा लेखक संघ हनुमान गढ़ के कविता—लघुकथा संकलन 'साहित्य प्रसव' का सम्पादन आकाशवाणी से हर विधा की रचनाएं प्रसारित। कुछेक फुठकर रचनाए राष्ट्रीय व प्रांतीय स्तर पर पुरस्कृत।

सम्प्रति : श्री गुरुनानक खालसा कॉलेज, श्री गंगानगर में अध्ययनरत।

अस्थाई निवास : द्वारा स० तारासिंह सोहल, बॉयलर मेकर चार्जमैन, लोकोशेड, क्वार्टर न० एल-38/ई, रेलवे कॉलोनी, हनुमान गढ़ ज० (राज०) 335512

अस्थाई पता : द्वारा रूपराम आशादीप, जिला एवं सैशन न्यायालय, श्री गंगानगर (राज०)